Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

मूल्य शिक्षा की पद्धतियाँ एवं प्रविधियाँ

Methods, Techniques & Devices of Value Education

डो.सुरेशभाई सी.पाडवी

अध्यक्ष एवं ऐसोसिऐट प्रोफेसर,पी.जी.डिपार्टमेन्ट ओफ ऐज्युकेशन

सरदार पटेल युनिवर्सिटी वल्लभ विद्यानगर आणंद (गुजरात)

शोध सारांश

वर्तमान शिक्षा का कार्य एक सिर्फ परीक्षा Present Education System is not the life परीक्षा देने के बाद विद्यार्थी को किताबों की कोई जरुरत नही रहतीष पढी हुई बाते, उसे जीवन में काम आनेवाली नहीं है, वह यह बात अच्छी तरह जानता है। जीवन का सबसे मूल्यवान वर्ष-बचपन का सुहावना समय और यौवन का उत्साह से भरपूर समय यू ही परीक्षा की चिंता और तनाव में वह जाता है। Education is a burden to the students. छोटी-छोटी भोली-भाली जान पर किताबो का थैला, झुका हुआ शरीर, दिन-रात रटना, टेन्शन और माँ-बाप के लिये भी बच्चे को विद्यालयों में भर्ती करानेका, डोनेशन देने का, टयुशन रखने का पारावार टेन्शन रहता है। वर्तमा शिक्षा से आनंद पैदा नही होता। शिक्षक शिष्य, माँ-बाप व समाज किसी को भी संथोष नहीं। क्यों ? वर्तमान शिक्षा केवल जानकारी अवं सूचनाओं का कार्यक्रम है। Information & only Information in every subjects. कहते है-Knowledge is light परन्तु इस शिक्षा से जीवन में रोशनी या शक्ति मिलने के बजाय जो बची है वह भी चली जाती है। शिक्षाविदों ने शिक्षक को माली का स्थान दिया है। विद्यालय को बगीचा और विद्यार्थी को फूल जैसा खुरबुदार बनाने का र्य दिया है। जैसे फल में मधुरता तब आती है, जब परिवक्व बनता है। वैसे विद्यार्थी के व्यक्तित्व में मधुरता, प्रसन्नता, सादगी, सेवा, सहानुभूति, जैसे मूल्य और उच्च चरित्र के गुण भर जाये वही तो उपेक्षा है।

की वर्डः मूल्य शिक्षा, पद्धतिर्या,प्रविधियो.

- **प्रस्तावना:**

एक शिक्षक माली क्या किसान जैसा साधारण (Simple) कार्य करने में भी सफल नही रहा है। शिक्षा के ध्येय तो गलत नही रहते। प्रत्येक देश अपनी शिक्षा प्रणाली में सर्वप्रथम ध्येय निश्चित करते है।

अमरीका ने अपनी सिक्षा नीति (Policy of Education) में (Responsibility) 'जिम्मेवारी'

या 'उतरदायित्व' को प्रथम स्थान दिया है। चीन ने अपनी शिक्षा नीति में मातापिता की आज्ञा मानना और 'स्वदेश प्रेम' को अग्र स्थान दिया है। जापानने व्यवसायिक कौशल और कला को अधिक महत्व दिया है।

भारत ने विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास (All Round Development) के ध्येय को शिक्षानीति में महत्व का स्थान दिया है।

केवल बौद्दिक नहीं, केवल 3-R की शिक्षा नही।(Reading, Writing & Recitation) नहीं। परन्तु चारों प्रकार की शिक्षा-सारीरिक-बौद्धिक, सांवेगिक-सामाजिक, भौतिक या आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया है, और भी अन्य ध्येय नश्चिय किये गए हैं।

इन्ही ध्येयों को लेवर उदेश (Aims) निर्धारीत किया जाते है। फिर अभ्यासक्रम की रचना, पाठयपुस्तक, शिक्षाप्रद अनुभव (Learning Experience) शैक्षिक प्रवृत्तिर्या, साधन (Devices) पद्धति (Methods)प्रविधि (Techniques) निश्चित किया जाते है। अन्तिम स्टेज में परीक्षा या मूल्यांकन होता है।

- **शिक्षा की सारी प्रकिया Process चक्रीय है। (Cyclic):**

1 Goal of Deucalion शिक्षा के ध्येय।
2 Aims शिक्षा के उदेश्य।
3 Objectives & Specific Objectives विषय अनुसार हेतु और विशिष्ट हेतुओं का निर्धारण।
4 Curriculum
5 Methods
6 Experiments
7 Activities
8 Evaluation

अभ्यासक्रम या पाठयक्रम की रचना-Curriculum

पद्धति प्रविधि (युक्ति-प्रयुक्ति) साधन तथा शिक्षा के सूत्र Methods, Techniques Devices & Maxims Of Education

शिक्षाप्रद अनुभवो का आदान-प्रदान Exchange of learning Experiences.

Co-curricular Activities शिक्षाप्रद सहायक प्रवृत्तिर्या

Examination या Evaluation

अब समझो, उदेश्य हो "देशप्रेम की भवना पेदा करने का" या "सत्य-अहिंसा सेवा और सादाचार का मूल्य विद्यार्थी में विकसित हों" और पाठयपुस्तक (Text Book) में उदेश्यो पर काव्य-कहानी, जीवन प्रसंग इत्यादि भी हो, यहाँ तक तो ठीक है- O.K. परन्तु जब मूल्यांकन का स्टेज आता है, तो वर्तमान परिस्थिति में विद्यालयों में क्या हालत दिखाई देती है? विद्यार्थी देशप्रेम, सत्य-अहिसा, सेवा सहनशक्ति आदि प्रश्नो के उत्तर चोरी करके लिख रहे हैं।

पद्धति, प्रविधि या प्रवृत्तियों के स्टेज पर मुडकर देखिए, अध्यापक कथन पद्धति, पश्नोत्र पद्धति, प्रधर्शन पद्धति या सामूहिक चर्चा (Group Discussion method) द्वारा पाठ सिखाता है। या तो फिर मौन पठन, या मुखपठन द्वारा ही कार्य चला लेता है। स्वास्थ्य के लिए भी कुछ प्रवृत्तिर्या कराता है परन्तु इतने ऊँचे उदेश्य आत्मसात होने के बजाय परीक्षा या मूल्यांकन के समय, ऊँचे परसेन्टेज लाने के लिए टयुशन्स प्रथा और आमतौर पर चोरी, कही कही शिक्षक भी चोरी करानी में रुचि रखते है, ऐसा सुना गया है।

अब सोचिये, कमी-कमजोरी कहाँ पर है? ध्येय व उदेश्य निर्धारण में? पाठयक्रम या पाठयपुस्तक में? या स्वयं शिक्षक में? या तो मूल्यांकन पद्धति में?

- **आध्यापक, अभ्यासक्रम, मूल्यांकनः**

शिक्षाप्रणाली में अध्यापक-अभ्यासक्रम और मूल्यांकन तीनों का परस्परिक सम्बन्ध है- तीनों में Inter-relation है। अद्यापक शिक्षा के कार्य में आधार स्तंभ है।

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का द्दष्टांत देखिए। गुरु ही शिक्षा का स्त्रोत रहाता था। गुरु संदीपनी और कृष्ण सुदामा, गुरु विश्वामित्र-वशिष्ठ के पास राम-लक्ष्म आदि, गुरु द्रोण के पासे पांडव-कौरव आदि राजकुमार, परशुराम के पास कर्ण। बुद्ध और उनके शिष्य, महावीर और उनके शिष्य। गुरु प्रणाली में सिक्षा को 'विद्या' कहते है। "सा विद्या या विमुक्तये.....(जो मुक्ति दिलावे वही विद्या है।) तक्षशिला, नालंदा आदि विद्यापीठो की शिक्षा प्रणाली देखिए। हमें किस से मुक्ति चाहिए?

- Attachment आसक्ति से।
- Desires हमारी अनंत इच्छाओ से, या अपेक्षाओं से (Expectations) हमें मुक्ति चाहिए।
- हमे (Tension) तनाव से मुक्ति चाहिए।
- (Comparison) परस्पर तुलना और (Competition) स्पर्धा से हमें मुक्त होना है।

Negative Attitude, Habits, Anger क्रोध और (Ego) अहंकार से हमे मुक्ति दिलाये वह विद्या.... है आज ? विद्या दिलानेवाला (Agent) शिक्षक या (Agency) संचालक, युनिवर्सिटी या सरकार में इन मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है? ऐसे वातावरण में भी शिक्षक का कार्य उत्तरदायित्वपूर्ण है। वह अपने वर्ग में फूल खिला सकता है। अभिभावनक में संस्कार का सिंचन करना है। शिक्षा द्वारा उपनयन संस्कार होता है। विद्यार्थी का नया जन्म (द्रिज) होता है।

प्रखर सिक्षाविद Educationist J. S. Ross ने कहा-विद्यालय एक उद्यन (gardener) है। विद्यार्थी एख पौधा (Plant) है। अध्यापक एख माली (garden) है।

- सम्पूर्ण शिक्षा के चार पहलू है।

1 ग्रहण करना Receiving

2 प्रत्युत्तर Responding

(Listening understanding & Expressing) इनकी पूर्ति हुई है यह दैखना।

3 Organizing आत्मीकरण और

4 चारित्र्यीकरण। इन दोनो पहलुओ को छोड दिया गया है।

शिक्षा की जितनी भी विधि प्रविधिर्या है, जितने भी Approaches अभिगम है, जितने भी उपकरण (Devices) प्रयोग किये जाते हो-ये सबी आत्मीकरण और चारित्र्यीकरण Characterization की और छात्रो को ले जानेवाले होना चाहिए। विद्यार्थी गुणवान, परिपक्व (Mature) बनें ऐसी विधिर्या हो।

Values are not taught, but they are caught
They are to be experienced and internalised.
A poor teacher tells (gives only informations)
An average teacher explains.
A good teacher demonstrates.
A great teacher inspires.

"Education without walls" सही शिक्षा चार दिवारों को बाहर होती है। आज की हमारी शिक्षा चार दिवारों के बीच बन्धन में मुरझाई है। हम भूल गये हैं कि- Nature is the greatest teacher

कुदरत स्वयं एख उच्चत्तर टीचर है। वह मौन रहकर भी शिक्षा का उत्तम ढंग से देती है। फूल,फल, पेड, धरती पहाड, सरिता, सरोवर, पंछी, आकास-सितारे, सूर्य-चांद सभी मौन रहकर भी Values मूल्यों की शिक्षा देते है।

सबसे ज्यादा प्रभावशाली शिक्षक वही होगा जिसने खुद Values को आत्मसात किये हों और वे उनकी चाल चलन, व्यवहार और अभिव्यिकत से निरंतर प्रस्तुत होते रहते हों। इसे आदर्श प्रस्तुति (Ideal presentation) प्रद्धति कहेंगे।

- **शिक्षा का अभिगम**

शिक्षा के भिन्न भिन्न अभिगम है-वे इस प्रकार है।

1 Direct Approach प्रत्यक्ष अभिगम
2 Indirect Approach परोक्ष अभिगम
3 Incidental Approach प्रसंगानुसार अभिगम
4 Accidental Approach आकस्मिक अबिगम

(Teaching is an art) सिखाना एक कला है। एक कौशल भी है (Teaching is a skill) (learning is a process) सीखना एक साधना है और Goal साध्य Values for life

(Teaching is an art) विद्यालय का समग्र वातावरण, पर्यावरण Approach शिक्षाप्रध हो। शिक्षक आचार्य-कर्मचारीगण सभी के व्यवहार गरिमाम हो, उसमे जीवन की खुशबू हो।

T.A.A. Total Atmospheric Approach शिक्षक का समूचा व्यवहार Communication मूल्यो को उभारनेवाला है, जिसे आदर्श प्रस्तुति कहेंगे। उसकी भाषा में माधुर्य लाघव, उसकी मुस्कान में स्नेह-क्षमा, उसकी पठाई में depth गहनता हो उसके जीवन से Inspiration प्रेरणा का प्रवाह सत निःसृत हो। उनका अभिगम विद्यार्थीयों के लिए उत्साहप्रद हो।

विद्यालय का प्रारम्भ प्रार्थना इश्वर प्रेम समूहगान या 'स्थितप्रज्ञ' के लक्षण बतानेवाले भगवदगीता के स्लोकों से हो। प्रार्थना के प्ररम्भ और अंत मे 3 मिनिट का मौन हो। प्रार्थना से ही विद्या का प्रारम्भ हो। हर क्लास का परिवर्तन घंटी बजाकर नही परन्तु म्यूझिकल गीत की दो लाइन (केसेट) बजाकर हो। ये गीत मूल्यो को सिखानावाले हो।

विद्यालय के प्रारम्भ के समय और शाम की छुट्टी के समय कैसेट द्वारा पूरा गीत बजे। गीत प्रेरक भाववाला हो।

Classroom communication में विद्यार्थीयों के प्रति regard सम्मान और स्नेह का भाव अवश्य रखा जाये, क्योंकि स्नेह, स्नेह को और आदर, आदर को जन्म देता है।

प्रशंसा (Appreciation) करने का मौका हाथ से कभी चला न जाय। व्यक्ति का उमंग, उत्साह प्रशंसायुक्त शब्दो से बठता है। Appreciation से Motivation होता है।

प्रतिदिन कोई न कोई (Value) मूल्य पर अध्यापक या विद्यार्थी एक छोटी सी कहानी, प्रसंग या घटना का वर्णन करे। हर एक विद्यार्थी प्रतिदिन अपने द्वारा किये गए मूल्य-प्रेरक कार्य का वर्णन करे। यह कार्य प्रार्थना सभा में होना अवश्यक है।

Discipline में भय या रुआव जमाने का भाव न हो। शिक्षक का कार्य पुलिस का नहीं, यह सदा याद रहे। उसका कार्य माली की तरह बालक रुपी पौधे को पुष्पित करने का To bring up सिक्षक सही अर्थनमें मूल्य-शिक्षका अग्रदूत, परिवर्तन का परिवाजक बना रहे। Child should like a free bird in the school campus

- **मूलय शिक्षा**

मूल्य शिक्षा के लिए कोइ एक निश्चित formula, Method, Technique या Strategy नहीं है। मूल्य शिक्षा का स्वरुप स्वयं की ग्रहणशीलता (Receptivity) पर निर्भर है।

Values are not taught but they are to be caught.

Values are be experienced and internalised.

मूल्यो को सिखाया नही जाता, परन्तु उनको स्वयं सीखा लेना होता है। उन्हे अनुभव किया जाता है और आत्मसात किया जाता है।

1 Direct Approach प्रत्यक्ष अबिगम समय पत्रक अनुसार विषय शिक्षण द्वारा महापुरुषो के जीवन प्रसंग कहानिर्य, बोध-कथाए, प्रकृति वर्णन, संत वणी, वेदवाणी या विषय शिक्षण दरम्यान मूल्यों का निर्देश करना है।

2 Indirect Approach परोक्ष अभिगम द्वारा अभ्यासक्रम या पाठयपुस्तक की सामाग्री द्वारा और सह-अभ्यास प्रवृत्तियों द्वारा, प्रवास या खेलकुद द्वारा परोक्ष रुप से मूल्यों की शिक्षा निःसृत करनी है।

3 Incidental Approach प्रसंगानुंसार विद्याल, समाज या मीडीया में प्रसिद किसी घटना के संदरेभ में मूल्यों का संकेत हो। अनुभवों के आदान प्रदान, चर्चा, साहित्य कुदरत के कार्य कलायो द्वारा या आदर्शो की प्रस्तुति द्वारा मूल्यों की शिक्षा स्वयंभू और स्वाYeविक हो।

मूल्यं शिक्षा के लिए-शिबिरों का आयोजन हो। अनुभवो का आदान-प्रदान और चर्चा हो। अच्छे विचार, अच्छा व्यवहार (manner) अच्छे कार्यो की प्रशंशा हो। शिक्षा हो। मूल्य निहित काव्य, साहित्य, कहानी कला एकांकी नाटिका, नृत्य इत्यादि का आयोजन हो।

प्रकृति सौदर्य अवलोकन, कला साहित्य, संगीत प्रति अभिरुचि पेदा हो ऐसी प्रवृत्तियों का आयोजन हो। ऐसी गेम्स भी जिनमें मूल्य हो।

Sow a thought, you reap an Act अच्छे विचार बोने से, अच्छे कार्य पेदा होते है।

Sow an Act, you reap a Habit. अच्छा कार्य बोने से, अच्छी आदत पैदा होते है।

Sow a Habit, you reap a character. अच्छी आदत बोने से, अच्छा चरित्र पनपता है।

Sow a Character, you reap a Destiny अच्छा चरित्र बोने से, अच्छा भाग्य होता है।

संन्दर्भः

- उचाट डी.ए.(2002) संशोधननी विशिष्ट पद्धतिओं, राजकोटः शिक्षाभवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय.
- देव जयेन्द्र (1983) शिक्षा के तात्विक आधार अहमदाबादः युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य.
- देव जयेन्द्र (1994) शिक्षा-चिंतको का सिक्षादर्शन, अहमदाबादः बी.ऐस.शाह प्रकाशन.
- पटेल विनोद जी. (1996) तत्त्वदर्शन और शिक्षा, सुरतः लायन गोपालभाई बुक सेलर.
- स्वामी सच्चिदानंद (2005) भारतीय दर्शन, अहमदाबादः गूर्जर साहित्यभवन.
- शाह दिपीका बी. (2004). शैक्षणिक संशोधन.अहमदाबादःयुनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड.